eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

डिजिटल मीडिया और लोक कला : सोशल मीडिया का प्रभाव

लोकेश्वर सिंह[1]
[1]शोधार्थी, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय, सिरसागंज, फिरोजाबाद (डॉ0भी0अ0 विश्वविद्यालय, आगरा)

Received: 05 April 2025, Accepted: 20 April 2025, Published online: 01 May 2025

Abstract

प्रस्तुत शोध पत्र में डिजिटल मीडिया विशेषकर सोशल मीडिया का भारतीय लोक कला पर प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही लोक कला अब डिजिटल प्लेटफार्म्स पर नई पहचान बना रही है। शोध में पाया गया है कि सोशल मीडिया ने लोक कला की पहुँच और प्रसार में अभूतपूर्व वृद्धि की है, कलाकारों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया है, तथा नवाचार और सहयोग को प्रोत्साहित किया है। इसके साथ ही यह जागरूकता और शिक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। परंतु इन अवसरों के साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी सामने आई हैं जिनमें प्रामाणिकता की समस्या, डिजिटल विभाजन, बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन प्रमुख हैं। शोध आलेख में इन चुनौतियों के समाधान हेतु डिजिटल साक्षरता में सुधार, क्षमता निर्माण और उपयुक्त नीतिगत ढाँचे के विकास पर बल दिया गया है, जिससे सोशल मीडिया और लोक कला के बीच स्वस्थ संतुलन स्थापित किया जा सके।

बीज शब्दः लोक कला, डिजिटल मीडिया, सोशल मीडिया, सांस्कृतिक विरासत, डिजिटल विभाजन, प्रामाणिकता, बौद्धिक संपदा अधिकार, डिजिटल साक्षरता, संस्कृति।

Introduction

भारतीय संस्कृति की विविधता और गहराई का एक अनिवार्य तत्व लोक कला है जिसकी जड़ें हमारी प्राचीन परंपराओं और इतिहास में फैली हुई हैं। लोक कला ने सदियों से हमारे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्यों का दर्पण प्रस्तुत किया है। यह कला के विभिन्न रूपों जैसे मौखिक परंपराएं, किस्से, नृत्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला आदि के माध्यम से व्यक्त होती रही है।

21वीं सदी में डिजिटल क्रांति ने संवाद, अभिव्यक्ति और सूचना के आदान–प्रदान के तरीकों में बड़े पैमाने पर बदलाव किया है। इस बदलाव का असर लोक कला जैसे पारंपरिक रूपों पर भी पड़ा है। विशेष रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने लोक कला के प्रचार, संरक्षण और विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

इस शोध पत्र में हम डिजिटल मीडिया खासकर सोशल मीडिया के लोक कला पर प्रभावों का गहन अध्ययन करेंगे। हमारा उद्देश्य यह समझना है कि सोशल मीडिया ने किस तरह लोक कला को प्रभावित किया है।

लोक कलाः एक परिचय– लोक कला किसी समुदाय या समाज की साझा अभिव्यक्ति का रूप होती है जो समय के साथ पीढ़ी दर पीढ़ी संचरण करती रहती है। यह उस समुदाय के जीवन-मूल्यों, विश्वासों और अनुभवों की झलक प्रस्तुत करती है। लोक कला की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह औपचारिक

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

शिक्षा या पेशेवर प्रशिक्षण के बिना पनपती है और स्थानीय सामग्रियों, तकनीकों एवं परंपराओं पर निर्भर करती है।

भारत में लोक कला की समृद्ध एवं विविध परंपराएं देखने को मिलती हैं। इनमें मधुबनी चित्रकला (बिहार), वारली पेंटिंग (महाराष्ट्र), पट्टचित्र (ओडिशा), कालीघाट पेंटिंग (पश्चिम बंगाल), फड़ और पिछवाई (दोनों राजस्थान) जैसी चित्रकला शैलियाँ ; भरतनाट्यम, कथक, कथकली और मणिपुरी जैसे नृत्य-रूप ; लावणी, पंडवानी, भजन और कीर्तन जैसी संगीत शैलियाँ और कठपुतली, नाटक तथा रामलीला जैसे प्रदर्शन कलाओं के विभिन्न स्वरूप शामिल हैं। ये सभी भारतीय लोक कला की व्यापकता को दर्शाते हैं।

लोक कला की यह परंपरा सदियों से स्थानीय समुदायों में विकसित होती आ रही है। पहले के समय में इसका प्रसार मुख्य रूप से मौखिक परंपराओं और गुरु–शिष्य परंपरा के माध्यम से हुआ।

लोक कला पर सोशल मीडिया का प्रभाव

1. **पहुँच और प्रसार–** सोशल मीडिया ने लोक कला के प्रसार और पहुँच में अद्वितीय वृद्धि की है। पहले ये कलाएँ मुख्यतः अपने स्थानीय समुदायों तक सीमित रहती थीं। अब एक मधुबनी चित्रकार आसानी से अपनी रचनाएँ इंस्टाग्राम पर साझा कर सकता है जिससे वे वैश्विक दर्शकों तक पहुँच सकती हैं। यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर लोक संगीत और नृत्य प्रदर्शनों के वीडियो को लाखों लोग देख रहे हैं। उदाहरण के लिए राजस्थानी लोक गायक मामे खान का 'केसरिया बालम' पारंपरिक गीत यूट्यूब पर बहुत वायरल हुआ है। इसी प्रकार गुजरात के गरबा, मणिपुर के पुंग चोलम, और पंजाब के भांगड़ा जैसे पारंपरिक नृत्य रूपों के वीडियो भी सोशल मीडिया पर व्यापक रूप से साझा किए जाते हैं।

सोशल मीडिया ने भौगोलिक सीमाओं को तोड़ते हुए लोक कलाकारों को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहचान और सराहना दिलाई है। यह न केवल उनके कार्यों के लिए एक महत्वपूर्ण प्लेटफॉर्म प्रदान करता है बल्कि सुनने और देखने के नए अवसर भी उत्पन्न करता है।

2. **संरक्षण और दस्तावेजीकरण–** सोशल मीडिया ने लोक कला के संरक्षण और दस्तावेजीकरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कई लोक कला रूप विशेष रूप से मौखिक परंपराओं पर आधारित अब विलुप्त होने के कगार पर हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों ने इन कला रूपों के डिजिटल दस्तावेजीकरण और संरक्षण का एक साधन प्रस्तुत किया है। फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफार्मों पर कई समूह और पृष्ठ हैं जो विशेष लोक कला रूपों के संरक्षण और प्रचार के लिए बनाए गए हैं। ये समूह न केवल कला के नमूने दर्शाते हैं बल्कि उनके इतिहास, तकनीकों, और सांस्कृ-तिक महत्व पर भी चर्चा करते हैं। उदाहरण के लिए, 'इंडियन फोकलोर' नामक एक फेसबुक पृष्ठ भारत के विभिन्न क्षेत्रों की लोक कथाएं, गीत, और परंपराएं साझा करता है। इसी प्रकार 'सहपीडिया' नामक यूट्यूब चैनल भारतीय लोक कला रूपों पर डॉक्यूमेंट्री तैयार करता है।

इसके अतिरिक्त अनेक संस्थान और संग्रहालय अपने संग्रह को डिजिटलीकरण और साझा करने के लिए सोशल मीडिया का सहारा ले रहे हैं। उदाहरण के तौर पर 'राष्ट्रीय हस्तशिल्प एवं हथकरघा संग्रहालय' ने अपने इंस्टाग्राम पेज पर विभिन्न भारतीय शिल्प कलाओं की तस्वीरें और वीडियो पेश किए हैं।

3. **आर्थिक सशक्तिकरण–** सोशल मीडिया ने लोक कलाकारों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले इन कलाकारों की आय केवल स्थानीय बाजारों और मेलों तक सीमित रहती थी

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

लेकिन अब वे अपनी कलाएं सोशल मीडिया के जरिये दुनिया भर में ग्राहकों को बेच सकते हैं। इंस्टाग्राम, फेसबुक, और विभिन्न ऑनलाइन मार्केटप्लेस ने लोक कलाकारों को अपनी कृतियों को सीधे उपभोक्ताओं के सामने पेश करने का अवसर प्रदान किया है। इससे बिचौलियों की आवश्यकता कम हो गई है और कलाकारों के लिए बेहतर मूल्य की संभावना बनी है। उदाहरण के तौर पर 'गाथा' नामक संगठन ग्रामीण कारीगरों को इंस्टाग्राम और फेसबुक के माध्यम से अपने उत्पादों को बेचने में सहायता करता है। इसी तरह, 'द इंडिया क्राफ्ट हाउस' जैसे ऑनलाइन स्टोर भारतीय लोक कला और शिल्प को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहित करते हैं। इसके अतिरिक्त क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म जैसे कि 'किकस्टार्टर' और 'इंडिगोगो' ने लोक कला परियोजनाओं के लिए धन जुटाने के नए तरीकों की पेशकश की है।

4. **नवाचार और सहयोग–** सोशल मीडिया ने लोक कला में नए विचारों और सहयोग को प्रोत्साहित किया है। यह विभिन्न कला शैलियों, परंपराओं और संस्कृतियों के बीच संवाद का एक अद्वितीय मंच प्रदान करता है जिससे नई और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का विकास संभव हो पा रहा है। अब लोक कलाकार एक–दूसरे से सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़ सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं और सामूहिकता को बढ़ावा दे सकते हैं। इस स्थिति ने विभिन्न लोक कला रूपों के बीच मिश्रण और समेकन को गति दी है।

उदाहरण के लिए 'मंजिल मिस्टिक्स' नामक एक संगीत समूह ने कई भारतीय लोक संगीत परंपराओं को आधुनिक संगीत के साथ मिलाकर प्रस्तुत किया है और अपने प्रदर्शन को यूट्यूब पर प्रकाशित किया है। इसी तरह 'फैबइंडिया' जैसे फैशन ब्रांडों ने पारंपरिक भारतीय बुनाई और कढ़ाई तकनीकों को समकालीन फैशन डिजाइन में शामिल किया है और अपने नवीन संग्रह को इंस्टाग्राम पर प्रदर्शित किया है। इसके अलावा सोशल मीडिया ने लोक कला और डिजिटल कला के बीच एक संवाद को सुविधाजनक बनाया है। कई कलाकार अब डिजिटल उपकरणों का उपयोग करके पारंपरिक लोक कला रूपों का पुनर्निर्माण करते हैं और अपने काम को सोशल मीडिया पर साझा करते हैं।

5. **शिक्षा और जागरूकता –** सोशल मीडिया ने लोक कला के प्रति शिक्षा और जागरूकता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पहले इन कलाओं का ज्ञान मुख्यतः स्थानीय समुदायों तक ही सीमित था लेकिन अब कोई भी व्यक्ति विभिन्न लोक कला रूपों के बारे में जानकारी आसानी से प्राप्त कर सकता है। ऑनलाइन ट्यूटोरियल और कार्यशालाओं के जरिए लोग इन कलाओं को सीखने के अवसर पा रहे हैं। यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर कई चैनल उपलब्ध हैं जो विभिन्न लोक कला रूपों पर शैक्षिक सामग्री प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे सोशल मीडिया साइट्स पर भी कई पृष्ठ और समूह लोक कला के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए सामग्री साझा कर रहे हैं।

उदाहरण के लिए 'इंडियन आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स' नामक इंस्टाग्राम पेज भारतीय शिल्प कला के बारे में जानकारी प्रदान करता है। इसके अलावा कई शैक्षिक संस्थान भी लोक कला के महत्व को समझते हुए इसे पाठ्यक्रम में शामिल कर रहे हैं जिससे और अधिक लोग इस क्षेत्र में रुचि ले रहे हैं।

सोशल मीडिया की चुनौतियाँ और सीमाएँ– सोशल मीडिया ने लोक कला को कई नए अवसर प्रदान किए हैं किंतु इसके साथ ही कुछ गंभीर चुनौतियाँ और सीमाएँ भी सामने आई हैं।

1. **प्रामाणिकता और शुद्धता की समस्या –** सोशल मीडिया ने लोक कला के व्यावसायीकरण और वस्तुकरण को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिससे उसके प्रामाणिकता और शुद्धता पर प्रश्न उठने लगे

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

हैं। कई बार लोक कला को बाजार की मांग के अनुरूप ढाल दिया जाता है जिससे इसके मूल तत्व और सांस्कृतिक महत्व प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए अनेक पारंपरिक कलाकृतियों को सरलता से तैयार किया जाता है ताकि वे 'इंस्टाग्राम' पर दिखाई देने के लिए अधिक आकर्षक बन सकें। इससे उनकी जटिलता और गहराई में कमी आ जाती है। इसी प्रकार कई लोक- संगीत और नृत्य शैलियों को समकालीन संगीत और नृत्य कोरियोग्राफी के साथ मिलाया जाता है जिससे उनके पारंपरिक स्वरूप और भावना में बदलाव हो जाता है।

कई शोधकर्ताओं का मानना है कि लोक कला का डिजिटलीकरण और उसका व्यावसायिक उपयोग इसके सांस्कृतिक और सामाजिक संदर्भ को हानि पहुंचा सकता है। लोक कला केवल एक कलात्मक प्रस्तुति नहीं है बल्कि यह एक संपन्न जीवन-शैली, विश्वास प्रणाली और सामुदायिक अनुभव है। जब इसे सोशल मीडिया पर साझा किया जाता है तो प्रायः इसका मूल संदर्भ भंग हो जाता है।

2. **डिजिटल विभाजन –** भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है लेकिन बावजूद इसके देश की आधी से अधिक जनसंख्या अभी भी डिजिटल दुनिया से बाहर है। ग्रामीण क्षेत्रों में जहां कई लोक कलाकार बसे हैं, इंटरनेट की पहुंच और डिजिटल साक्षरता की कमी पाई जाती है। इस डिजिटल विभाजन का नतीजा यह है कि कई पारंपरिक कलाकार सोशल मीडिया के लाभों से वंचित रह जाते हैं। वे अपनी कलाओं को ऑनलाइन प्रदर्शित नहीं कर पाते और न ही वैश्विक मंच पर अपनी पहुंच बना पाते हैं। इसके फलस्वरूप कुछ लोक कला रूपों का सोशल मीडिया पर प्रतिनिधित्व कम होता जा रहा है जबकि वे कलाकार जो डिजिटल संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं उनकी कलाएं अधिक प्रमुखता से दिखाई देती हैं। सोशल मीडिया पर लोक कला का प्रदर्शित होना अक्सर एक विशेष वर्ग - शहरी, शिक्षित, और डिजिटल रूप से साक्षर तक ही सीमित रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि लोक कला के विभिन्न रूपों और उनकी व्याख्याओं को समझने में कमी आ सकती है।

3. **बौद्धिक संपदा अधिकार और अनधिकृत उपयोग–** सोशल मीडिया ने लोक कला के अनधिकृत उपयोग और बौद्धिक संपदा अधिकारों के उल्लंघन से संबंधित मुद्दों को और उभारा है। पारंपरिक लोक कला सामान्यतः सामूहिक ज्ञान और सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा मानी जाती है जिसे मौजूदा बौद्धिक संपदा कानूनों के तहत सही तरीके से संरक्षित नहीं किया गया है। सोशल मीडिया के प्लेटफार्मों पर लोक कला के चित्र और वीडियो अक्सर बिना उचित श्रेय या अनुमति के साझा किए जाते हैं। कई बार इन छवियों का इस्तेमाल व्यावसायिक लाभ के लिए किया जाता है जिसके चलते मूल कलाकारों को कोई वित्तीय लाभ नहीं मिलता। उदाहरण के लिए कई फैशन और इंटीरियर्स डिजाइन ब्रांडों ने पारंपरिक भारतीय लोक कला के मोटिफ्स को बिना मूल समुदायों को कोई क्रेडिट या प्रतिपूर्ति किए अपने उत्पादों में इस्तेमाल किया है। यह वास्तव में सांस्कृ-तिक शोषण और दुरुपयोग का एक रूप है जिसे ' सांस्कृतिक स्वामित्व हरण' कहा जाता है।

4. **गुणवत्ता और मानकों की कमी–** सोशल मीडिया पर सामग्री के वितरण का एक और पहलू है गुणवत्ता और मानकों की कमी। इस पर कोई भी व्यक्ति अपनी सामग्री साझा कर सकता है इसका आशय यह है कि निम्न गुणवत्ता वाली या गलत जानकारियां आसानी से फैल सकती हैं। लोक कला के संदर्भ में यह एक चिंताजनक मुद्दा है, क्योंकि कई तथाकथित 'विशेषज्ञ' सोशल मीडिया पर अपनी व्याख्याएं और

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

जानकारियां साझा करते हैं जो हमेशा सही या प्रामाणिक नहीं होतीं। इससे लोक कला के संबंध में भ्रम और गलतफहमियां उत्पन्न होने का खतरा बढ़ जाता है।

साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का वाणिज्यिक मॉडल भी लोक कला की प्रस्तुति पर असर डालता है। ये प्लेटफॉर्म अधिक संभावना को बढ़ावा देने के लिए तैयार किए गए हैं जो अक्सर सनसनीखेज, विवादास्पद, या अत्यधिक सरल सामग्री को प्राथमिकता देते हैं। इससे लोक कला की जटिलता और गहराई का अपमान हो सकता है।

5. **स्थिरता और निरंतरता की चुनौतियाँ –** आखिरकार सोशल मीडिया पर लोक कला की स्थिरता और निरंतरता एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन चुका है। सोशल मीडिया के ट्रेंड्स तेजी से बदलते हैं जिससे आज जो लोक कला के रूप प्रचलित हैं वे कल के लिए अज्ञात हो सकते हैं। साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफार्म भी स्थिरता नहीं दिखाते हैं। वे नियमित रूप से अपनी नीतियों, एल्गोरिदम, और कार्यप्रणाली में परिवर्तन करते रहते हैं जिससे लोक कलाकारों के लिए अपने दर्शकों से जुड़ना और अपनी कला को प्रदर्शित करना कठिन हो जाता है।

लोक कला को डिजिटल माध्यमों पर संरक्षित करने और दस्तावेजीकृत करने के प्रयासों के लिए दीर्घकालिक योजना और संसाधनों की आवश्यकता होती है। हालाँकि सोशल मीडिया के वाणिज्यिक मॉडल अक्सर तात्कालिक लाभ और जुड़ाव पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो कि इन दीर्घकालिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाधक हो सकते हैं।

भविष्य में संभावनाएं – सोशल मीडिया और लोक कला के बीच एक संतुलित संबंध की दिशा में तेजी से बढ़ना होगा। विभिन्न चुनौतियों के बावजूद सोशल मीडिया और लोक कला के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध की संभावनाएँ खोजी जा सकती हैं।

1. **डिजिटल साक्षरता और क्षमता का विकास –** लोक कलाकारों के लिए डिजिटल साक्षरता और क्षमता निर्माण अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्हें सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का प्रभावी उपयोग करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए ताकि वे अपनी कला को दिखा सकें और वैश्विक बाजारों तक पहुँच बना सकें। कई संगठन और संस्थान इस दिशा में काम कर रहे हैं। उदाहरण के लिए 'डिजिटल एम्पावरमेंट फाउंडेशन' ग्रामीण कलाकारों को डिजिटल कौशल सिखाता है। 'एपिक्राफ्ट' जैसे ई–कॉमर्स प्लेटफॉर्म कारीगरों को ऑनलाइन व्यापार करने में सहायता देते हैं।

2. **नीतियों और कानूनी ढाँचे का विकास–** पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के संरक्षण के लिए सही नीतियों और कानूनी ढाँचे का विकास आवश्यक है। इससे लोक कला के अनधिकृत उपयोग और शोषण को रोकने में मदद मिलेगी। 'विश्व बौद्धिक संपदा संगठन' (World Intellectual Property Organisation) जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के संरक्षण के लिए प्रयासरत हैं। भारत में 'पारंपरिक ज्ञान डिजिटल लाइब्रेरी' (Traditional Knowledge Digital Library) पारंपरिक ज्ञान के अनधिकृत पेटेंटिंग को रोकने का एक प्रयास है।

3. **सामुदायिक स्वामित्व और भागीदारी –** लोक कला के डिजिटलीकरण और उसके प्रचार में स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी महत्वपूर्ण है। यह सुनिश्चित करता है कि लोक कला का प्रदर्शन और उसकी व्याख्या वास्तविकता और सम्मान के साथ हो। 'कम्युनिटी–बेस्ड कल्चरल हेरिटेज मैनेजमेंट' जैसे मॉडल

eISSN 2581-8996
ONLINE
INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 08, Special Issue 02, May 2025

समुदायों को अपनी सांस्कृतिक धरोहर के प्रबंधन में सशक्त बनाते हैं। इसी प्रकार 'पार्टिसिपेटरी डिजिटाइजेशन' का दृष्टिकोण पारंपरिक समुदायों को डिजिटलीकरण की प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल होने का मौका प्रदान करता है।

4. **शैक्षिक और जागरूकता कार्यक्रम –** लोक कला के महत्व, इतिहास और संदर्भ के बारे में शिक्षा और जागरूकता बेहद आवश्यक है। इससे यह सुनिश्चित होगा कि लोक कला केवल एक कला के रूप में नहीं बल्कि एक जीवित सांस्कृतिक परंपरा के रूप में पहचानी जाए और उसकी सराहना की जाए। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में लोक कला का अध्ययन करने से युवा पीढ़ी में इसके प्रति रुचि और सम्मान का विकास होगा।

निष्कर्ष– डिजिटल मीडिया विशेषकर सोशल मीडिया ने लोक कला के विकास और उसके प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यह प्लेटफॉर्म लोक कला की पहुंच को व्यापक बनाता है, इसके संरक्षण और दस्तावेजीकरण में सहायक होता है, साथ ही कलाकारों को आर्थिक रूप से सशक्त करने में मदद करता है। इसके अलावा यह नवाचार और सहयोग को बढ़ावा देने के साथ–साथ लोक कला के प्रति जागरूकता और शिक्षा को भी प्रोत्साहित करता है।

फिर भी सोशल मीडिया ने लोक कला के लिए कुछ चुनौतियों को भी जन्म दिया है। प्रामाणिकता और शुद्धता की समस्या, डिजिटल विभाजन, बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन, गुणवत्ता और मानक की कमी और स्थिरता की समस्या ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए और सोशल मीडिया तथा लोक कला के बीच एक स्वस्थ संतुलन बनाने के लिए हमें डिजिटल साक्षरता में सुधार, क्षमता निर्माण, उपयुक्त नीतियों और कानूनी ढांचे का विकास, और सामुदायिक सहयोग को बढ़ावा देने की आवश्यकता है।

संदर्भ-ग्रंथ सूची -

1. राय, उमेश कुमार (2014) ,सामाजिक मीडिया का बढ़ता दायरा वरदान भी अभिशाप भी, एड्रपिडिया प्रकाशन, Sahitya Samhita .org

2. डा. श्रीमती हेमलता बोरकर वासनिक. सामाजिक मीडीया का भारतीय समाज पर प्रभाव. Int. J. Rev. and Res. Social Sci. 5(1): Jan.- Mar., 2017; Page 07-11 .

3. ज्योत्स्ना अकीलन, रम्या राजारामन, तीर्थ गिरी, स्नेहा सुधर्शन, ऐश्वर्या जयरामन, विशालाक्षी रॉय, क्लेलिया फुर्लान, और माईके लुडले। (2022). *IMPACT OF SOCIAL & DIGITAL MEDIA ON INDIAN CLASSICAL ARTS, DURING THE PANDEMIC*.https://www.festivalsfromindia.com/wpcontent/uploads/2022/06/ArtSpire-Earthen-Lamp-Research-Report-April-2022-.pdf

4. सेन, बी. (2025). पारंपरिक कलाओं पर डिजिटल मीडिया का प्रभाव. *The impact of digital media on traditional arts*. Vocal Media. https://vocal.media/feast/the-impact-of-digital-media-on-traditional-artsv